BA Part-II
History Notes

By- Dr. Durga Bhawani

B A II History (Hons) IV Th Paper.

Q. मेटरनिक पद्धति पर निबंध लिखें।

Ans:- नेपोलियन के पतन के बाद यूरोप में एक और महान व्यक्ति मेटरनिक का उदय हुआ। जब तक वह ऑस्ट्रिया के प्रधान मंत्री के पद पर रहा और जब तक वह जीवित रहा यूरोप के शासन का बागडोर इसी के हाथ में रहा। समस्त यूरोपवासियों पर उस की महान शक्तियों का प्रभाव बना रहा। इसलिए अनेक इतिहासकारों ने इस युग को मेटरनिक युग कहा है।

मेटरनिक एक महान पुरुष, दूरदर्शी राजनीतिज्ञ तथा प्रतिक्रियावादी नेता था जिसने अपनी इच्छानुसार यूरोप के इतिहास को बनाया।

हेजेन के मतानुसार 1815ई से 1848 ई० तक के बीच की पीढ़ी की दृष्टि से मेटरनिक यूरोप का सर्वाधिक प्रभावशाली तथा शक्ति सम्पन्न व्यक्ति था।

* मेटरनिक की शासन संबंधी नीति- मेटरनिक का उदय प्राचीन और नवीन काल के मध्य में हुआ था। अपने जीवन के अंतिम दिनों में वह कहता था "कि यदि मैं इस काल से पहले उत्पन्न होता तो उस युग को देख कर संतुष्ट रहता और यदि इस युग के बाद इस संसार में आता तो सुधारों में सहायक रहता। आज मुझे अपना जीवन शासन के गिरते हुए भवन के लिए आधार स्तम्भ निर्मित करने में व्यतीत करना पड़ रहा है।"

मेटरनिक नवीन विचारों से द्वेष रखने वाला, संकीर्ण प्रवृत्तियों का मुखिया तथा प्रतिक्रियावादी दल का प्रमुख नेता था। बचपन से ही वह क्रांतिकारी विचारों का कट्टर शत्रु था। शासनसूत्र हाथ में आते ही उसने निश्चय कर लिया था कि वह आस्ट्रिया में क्रांतिकारी विचारों को रोक देगा। नेपोलियन के बाद 1815 ई० से 1848 ई० तक वह समस्त यूरोप पर छाया रहा और फ्रांसीसी राज्य क्रांति के प्रभावों

को यूरोप से नष्ट करने का प्रयास करता रहा। वियना की कांग्रेस के समक्ष उसने पूरी तरह स्पष्ट कर दिया था कि वह यथास्थिति की नीति का अनुसरण करने वाला है — जिसका अर्थ है - 'शासन करो परन्तु बदलो नहीं' उसने आस्ट्रिया में पुनः प्राचीन निरंकुश पद्धति स्थापित की, वह क्रांति का घोर शत्रु था। उसने निरंकुश शासन को दृढ़ बनाने के लिए सारे साम्राज्य में गुप्तचरों को आदेश दिया कि वे नवीनतम एवं परिवर्तन के इच्छुक व्यक्तियों का पता लगाए और फिर उनका चुन-चुन कर वध किया गया। उसने प्रेस तथा भाषण पर कठोर प्रतिबंध लगा दिया। देश में राष्ट्रीयता का प्रचार ना हो सके, इसके लिए विद्यालयों के शिक्षक एवं छात्रों पर भी प्रतिबंध लगा दिया।

उसने एक निरीक्षक बोर्ड की स्थापना की, जिसका कार्य राष्ट्रीयता की भावना रखने वाली पुस्तकों का अन्त करना था। आस्ट्रिया में निवास करने वाली विभिन्न जातियों पर राष्ट्रीय प्रतिबंध लगा दिया गया, जिससे वे राष्ट्र निर्माण की इच्छा ना कर सकें। उसने उनके समस्त शासन संबंधी अधिकारों को छीन लिया परन्तु वह जनता के हृदय में छिपी हुई राष्ट्रीयता की भावना को दबा नहीं सका और दबी हुई चिंगारी के समान वह बराबर सुलगती रही। यद्यपि वह कुछ समय के लिए अपनी नीति में सफल रहा परन्तु उसकी सफलता क्षणिक थी। क्रांति की भावनाएं चारों-ओर फैलती गई और 1848 ई० में ज्वालामुखी के समान फूट पड़ी, जिसने मेटरनिक को आस्ट्रिया से बाहर जाने के लिए मजबूर कर दिया।

* **दमनकारी कानूनों का निर्माण** — मेटरनिक ने ऐक्स-ला-शैपेल की कांग्रेस से अनुमति प्राप्त कर

लेने के बाद 1819 ई० में कार्ल्सबाद में राज्य परिषद का सम्मेलन बुलाकर जर्मनी में राष्ट्रीयता के सिद्धांतों का दमन करने के लिए कठोर दमनकारी नियम पास कराए। इन कानूनों द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन दब गए। छात्रों और प्रोफेसरों पर नियंत्रण रखने के लिए सभी विद्यालयों में एक-एक निरीक्षक नियुक्त किया गया। कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों में राष्ट्रीय भावनाओं का दिग्दर्शन करने वाली समस्त पुस्तकों को हटा लिया गया। छात्रों को राजनीतिक क्षेत्र में भाग लेने से रोक दिया गया तथा प्रेस की स्वतंत्रता समाप्त कर दी गई। समस्त देशभक्तों को कैद कर लिया गया और हैनोवर, हेस व ब्रुन्सविक के राज्यों में सेनाएं भेजकर पुनः निरंकुशता की स्थापना कर दी गई।

* **इटली में राष्ट्रीय भावना का दमन** – नेपोलियन के पतन के बाद मेटरनिक ने वियना कांग्रेस द्वारा पुनः इटली को छोटी-छोटी राजनीतिक इकाइयों में विभाजित करके स्वेच्छाचारी शासन स्थापित कर दिया और राष्ट्रियता तथा उदारवादी विचारों का दमन किया जाने लगा। राष्ट्रियता की भावना का इस प्रकार दमन देख कर इटली की जनता अप्रसन्न हो गई। उसने निरंकुशता तथा स्वेच्छाचारिता का विरोध करने के लिए स्थान-स्थान पर विद्रोह करके वहाँ के राजाओं को भगा दिया परन्तु मेटरनिक ने लेबोरव के कांग्रेस में रुस तथा प्रशा से सैनिक सहायता प्राप्त करके क्रांतिकारियों को कठोरतापूर्वक दमन करके उनके नए संविधान को समाप्त कर दिया।

* **1848 ई० की क्रांति** – मेटरनिक प्रतिक्रियावादी विचार का प्रमुख नेता था। उसने प्रेस, समाचार-पत्रों, भाषण आदि पर कठोर प्रतिबंध लगा दिया था। उसकी दमनकारी नीति ने उसके शत्रुओं की संख्या में वृद्धि कर दी थी। जिससे 1848 ई० में उसको देश छोड़कर

भाग जाना पड़ा। उदारवाद, समाजवाद और राष्ट्रीयता के प्रसार ने उसकी नीति को असफल बना दिया। समाजवाद का प्रसार श्रमिकों, मजदूरों तथा कारीगरों में अत्यधिक हुआ। उन्होंने अपने निजि संघ बना लिए तथा पूंजीपतियों की अधीनता से मुक्त होने के प्रयत्न करने लगे।

उदारवाद का प्रसार विशेष रूप से मध्यम वर्ग में हुआ। समस्त ~~विद्यार्थी~~ विद्यार्थी, लेखक, प्रोफेसर, विचारक तथा अन्य लोग मेटरनिक की नीति से असंतुष्ट हो गए और मेटरनिक के स्वेच्छाचारी शासन के विरुद्ध आवाज उठाने लगे। उदारवादी नेता स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व का समस्त जनता में प्रचार करने लगे। राष्ट्रीयता की भावना आस्ट्रिया की विभिन्न प्रजातियों में अपना प्रभाव फैलाने लगी। आस्ट्रियाई साम्राज्य के बोहेमिया हंगरी तथा विभिन्न प्रांतों के निवासी वैध राजसत्ता की स्थापना का प्रयत्न करने लगे।

1848 ई० की राज्य क्रांति के समाचार ने आस्ट्रिया को भी अत्याचारों का अंत करने के लिए प्रोत्साहित किया। चारों ओर मेटरनिक नीति का घोर विरोध किया जाने लगा और हर और यह आवाजें उठाई जाने लगी "मेटरनिक का नाश हो"। मेटरनिक को भी विश्वास हो गया कि अब उसके शासन का अंत हो गया है और उसको जन-साधारण के सामने झुकना पड़ा। भयभीत होकर वह 1848 ई० में आस्ट्रिया छोड़ कर भाग गया और आस्ट्रिया की शक्ति के साथ ही उसकी शक्ति का भी अंत हो गया।

प्रो० हेयर्स के अनुसार— "मेटरनिक के प्रयत्नों के बावजूद प्राचीन परिपाटी का विनाश हो चुका था और उसे किसी भी प्रकार बचाया नहीं जा सकता था।"

—— X ——